याद आए आंखां खुलें, तब तुमें रहे उमेद।
ज्यों मकसूद सब होवहीं, अब कहूं तिन भेद।। ६५ ।।

यह सब बातें याद आने पर हम सावचेत हो जाएंगे। तब घर चलने की चाहना होगी। वह सब मिलेगा कैसे? उसकी भी हकीकत बताती हूं।

ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम।
न तो लेते अंदर, केती बेर है हम।। ६६ ।।

यह रात थोड़ी लम्बी कर दी है, क्योंकि तुम्हारी खेल देखने की इच्छा पूरी नहीं हुई। नहीं तो खेल खत्म करके तुमको परमधाम ले चलने में कितनी देर लगती है।

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। १४६६ ।।

सनन्ध–नूर नूर-तजल्ला की

कह्या जाहेर रसूलें, मैं हरफ सुने हैं कान।
सो आए केहेसी इमाम, मैं लिखे नहीं फुरमान।। १ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैंने खुदा से मारफत के वचन सुने हैं, लेकिन कुरान में नहीं लिखे हैं। इमाम मेंहदी आकर उनको जाहिर करेंगे।

जो हरफ जुबां चढ़े नहीं, सो क्यों चढ़े कुरान।
और जुबां ले आवसी, इमाम एही पेहेचान।। २ ।।

जो बातें मारफत की मुझे याद ही नहीं रहीं वह कुरान में कैसे कहता। उन्हीं बातों को दूसरी भाषा हिन्दुस्तानी में इमाम मेंहदी बोलेंगे। यही उनकी पहचान होगी।

बोलें न मेंहेदी एक जुबां, जुबां बोलें कई लाख।
आगे बिन जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख।। ३ ।।

इमाम मेंहदी एक भाषा नहीं बोलेंगे। वह कई भाषाओं में बोलेंगे। मोमिनों के तनों में बैठकर लाखों भाषाओं में बोलेंगे। यह तन मोमिनों के होंगे, इसलिए लिखा है कि वह बिना अंग के बोलेंगे।

खेल में मेंहेदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर।
आगे तो नूर-तजल्ला, तहां जुबां बोल है और।। ४ ।।

खेल में मेंहदी की भाषा सरल और सुगम होगी। साहित्यिक और कानूनी भाषा जिसके अर्थ न हों, नहीं होगी। आगे तो नूरतजल्ला है, परमधाम है जहां बोली और भाषा अलग है।

खातिर मोमिन रसूलें, कई निसान लिखे प्यार कर।
सो मैं ठौर ठौर हक बका, कर देऊं सब खबर।। ५ ।।

मोमिनों के वास्ते रसूल साहब ने प्यार करके कई तरह के निशान लिखे हैं जिससे हमारी और अखण्ड घर की पहचान होती है। उनके मैं ठिकाने बताती हूं।

इमामें मोहे सब दियो, राख्यो न कछुए बीच।
गुन अंग सोभा देय के, आप हुए नेहेचित।। ६ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मुझे इमाम साहब ने सब कुछ दे दिया है। कुछ भी बाकी नहीं रखा। गुण, अंग और शोभा देकर आप बेफिक्र हो गए हैं।

Nijanand App

अब केहेनी आई असल की, नैन जुबां असल।
बातें करूं असलू, असल की अकल।।७ ।।

अब मुझे घर की असल बातें बतानी हैं। वह सब घर की आंखों से, जबान से और परमधाम की बुद्धि से बताऊंगी।

अब कहूं अर्स रूहन को, अर्स हक खिलवत बात।
गोसे अपनी रूहोंसों, बैठ करूं अपन्यात।।८ ।।

अब अर्श के मोमिन को अर्श की खिलवत की बातें एकान्त में एक किनारे बैठकर अपना समझकर बताऊंगी।

हक बातें तो इत सुनसी, पर हम जो करत गुजरान।
पेहेले कहूं आगे नूर-तजल्ला, जो ले खड़ा हक फुरमान।।९ ।।

हक की बातें तो हम यहां सुनेंगे, पर हमारी रहनी क्या है उस पर विचार करो। पहले श्री राजजी महाराज के सामने रसूल साहब जो कुरान लेकर खड़े हैं, उनकी बातें कहती हूं।

आगे नूर फुरमान के, खड़ा हक नूर का नूर।
जिन से पैदा मलायक, चुआ कतरा जिनों अंकूर।।१० ।।

आगे श्री राजजी महाराज के हुकम से अक्षर ब्रह्म का नूरी फरिश्ता असराफील, जिसके कतरे से सारे फरिश्ते और सृष्टि पैदा हुई है, खड़ा है।

अब नेक कहूं इन नूर की, इन नूर से पैदा नूर।
पेहेले कहूं तिन नूर की, जित रूहें खेली मांहें जहूर।।११ ।।

अब थोड़ी-सी अक्षर ब्रह्म की कहती हूं। जिनके नूर से असराफील तथा असराफील के नूर के कतरे (बूंद) से सारा खेल बना है, जिसमें हमने जाहिर होकर बृज लीला खेली।

अब कहूं रास जहूर की, इन खेल से न्यारा इंड।
सो नूर नजर ऐसा हुआ, नूर सारा ब्रह्मांड।।१२ ।।

अब रास की लीला जाहिर करती हूं जो इस ब्रह्माण्ड से न्यारी है। अक्षर की नजर से ही योगमाया के ब्रह्माण्ड की लीला (रास) अखण्ड हो गई।

इत खेलत स्याम गोपियां, ए जो किया अर्स रूहों विलास।
है ना कोई दूसरा, जो खेले मेहेबूब बिना रास।।१३ ।।

यहां श्री कृष्ण और गोपियां हैं। वह वही लीला कर रही हैं जो हम रूहों ने रास लीला खेली थी। धनी के बिना और दूसरा कोई नहीं हो सकता जो हमारे साथ रास खेलता।

ए हमारी अर्स न्यामतें, याके हमपे सहूर।
कह्या कतरा नूर का, चुआ है अंकूर।।१४ ।।

यह दोनों लीलाएं (बृज और रास) हमारे घर की न्यामतें हैं और इनको हम ही समझते हैं। जिनका वर्णन श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के कतरे (तारतम वाणी) से हुआ और सबको पता लगा।

इत सब्द न पोहोंचे दुनी का, नेक इन की देऊं खबर।
कायम हुआ साइत में, जो आया नूर नजर।।१५ ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में इस दुनियां के शब्द नहीं पहुंचते। यह अक्षर की नजर में एक पल में अखण्ड हो गया। उसकी थोड़ी-सी पहचान देती हूं।

Nijanand App

ए जो बात बका अर्स नूर की, सो केहेनी या जिमी मांहें।
क्यों सुनसी दुनी इन कानों, जो कबहूं न सुनी क्यांहें।। १६ ।।

यह बातें अखण्ड अक्षर और अक्षरातीत की हैं और कहना इस संसार में है, तो यह दुनियां, जिसने कभी इन कानों से नहीं सुना, वह अब कैसे सुनेगी।

कोट हिस्से एक हरफ के, हिसाब किया मिहीं कर।
एक हिस्सा न पोहोंच्या इन जिमी लग, ए मैं देख्या दिल धर।। १७ ।।

एक अक्षर (शब्द) के मैंने करोड़ हिस्से किए, उसमें से एक हिस्से के समान भी इस ब्रह्माण्ड में बृज रास का ज्ञान नहीं पहुंचा है। यह मैंने दिल में विचार करके देख लिया है।

एक जरा इन जिमी का, ताके नूर आगे सूर कोट।
सो सूर न आवे नजरों, इन जिमी जरे की ओट।। १८ ।।

रास की जमीन की एक ककड़ी की रोशनी के सामने यहां के करोड़ों सूर्य ढक जाते हैं।

सोने जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त।
सोभा जो नूर बन की, सो कही न जाए मुख हस्त।। १९ ।।

उस रास के अखण्ड वृन्दावन के वनों की उपमा यहां के सोने और जवाहरात से करूं तो यह झूठी है। जो वहां की शोभा है वह यहां के मुख से कही नहीं जाती और हाथ से लिखी नहीं जा सकती।

जो कहूं रोसनी एक पात की, सो भी कही न जाए।
कोट चांद जो सूर कहूं, तो एक पातै तले ढंपाए।। २० ।।

नित्य वृन्दावन के वृक्ष के पत्तों की रोशनी की शोभा भी नहीं कही जा सकती। यहां के करोड़ों चन्द्रमा और सूर्य की उपमा दूं तो यह सब एक पत्ते की रोशनी में ढक जाते हैं।

नूर ससि बन पसु पंखी, जिमी नूरै रेजा रेज।
थिर चर नूर सबों मिने, सब चीजें नूर तेज।। २१ ।।

वहां का चन्द्रमा, वन, पशु, पक्षी, जमीन का कण-कण नूर का है तथा चल और अचल में नूर की शोभा है। सब चीजें नूर के तेज से भरी हुई हैं।

वस्तर भूखन इन जिमी के, सो याही जिमी माफक।
जिन जिमी जरे की रोसनी, कही न जाए रंचक।। २२ ।।

नित्य वृन्दावन के वस्त्र आभूषण भी वहीं के माफिक हैं। वहां की जमीन के एक जर्रे (कण) की रोशनी का बयान नहीं हो सकता।

सुख जो अर्स अरवाहों के, जो लिए जिमी इन।
सो तुम देखो सहूर कर, कहे न जाए मुख किन।। २३ ।।

अर्श की रूहों को जो सुख उस वृन्दावन में मिले हैं, वह तुम विचार कर देखो। उनका वर्णन मुख से नहीं हो सकता।

जिन जिमी की ए रोसनी, ऐसे बाग के दरखत।
तो इत सुख ऐसे ही चाहिए, अर्स बका की न्यामत।। २४ ।।

जिस नित्य वृन्दावन के एक जर्रे (कण) का इतना प्रकाश है, वहां के वन के वृक्ष तथा सुख अखण्ड घर की न्यामत हैं। इसलिए वहां सुख ऐसे ही चाहिए।

Nijanand App

ए जिमी बाग पांचों चीजें, ए जो पैदा किए नूर।
एक पल लेहेरें कायम किए, नूर का ऐसा जहूर।। २५ ।।

उस वृन्दावन की जमीन, बगीचे और पांचों चीजें (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश) नूर के हैं। अक्षर ब्रह्म के नूर की ऐसी शोभा है कि अक्षर ने एक पल में ही सबको अखण्ड कर लिया।

इत खेलत रूहें अर्स की, जो स्यामें उतारी किस्ती पर।
सो रूहें पोहोंची इन बाग में, और तोफाने डूबे काफर।। २६ ।।

इस नित्य वृन्दावन में श्री कृष्ण ने योगमाया की नाव बनाकर अर्श की रूहों को अपने पास बुलाया और रूहें उस वृन्दावन में पहुंचकर खेलीं और कालमाया के ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया।

ए नूह तोफान कह्या रसूलें, और गुझ रह्या रूहों रोसन।
किस्ती पार उतारी सबों सुनी, सुध न परी पोहोंची बाग किन।। २७ ।।

इसको ही रसूल साहब ने नूह-तूफान कहा है और इसका गुझ (भेद, रहस्य) आज दिन तक किसी को पता नहीं चला। किश्ती और पार उतरने की बात तो सबने सुनी, परन्तु किस बगीचे में पहुंची इसका पता किसी को नहीं लगा।

बात बड़ी इन नूर की, ए तो नेक कह्यो प्रकास।
इत खेलें रूहें हक सों, बिध बिध के विलास।। २८ ।।

यह तो मैंने जरा-सा बताया है। यहां के नूर की बड़ी भारी शोभा है। यहां पर रूहों ने हक से रास खेलकर तरह-तरह के सुख लिए।

कह्या जाए ना नूर इन बाग जिमी, हुआ सब रोसन भरपूर।
जिन ऐसा रोसन किया पल में, सिफत क्यों कहूं असल नूर।। २९ ।।

इस नूरी बाग और जमीन की शोभा का वर्णन नहीं हो सकता जिसे अक्षर ब्रह्म ने एक पल के अन्दर नूर से भर दिया तो ऐसे अक्षर ब्रह्म की सिफत (विशेषता) किन शब्दों में वर्णन करूं?

हद सब्द दुनी में रह्या, पोंहोंच्या नहीं नूर रास।
तो क्यों पोंहोंचे असल नूर को, जिनकी ए पैदास।। ३० ।।

यहां हद के शब्द माया में ही रह गए, अखण्ड रास तक नहीं पहुंचे, तो अक्षर तक यहां के शब्द कैसे पहुंच सकते हैं, जिनके हुकम से यह सारा संसार बना है।

बड़ी भिस्त भी याही से, जो कही कजा के मांहें।
तिन भिस्त के नूर की, बात बड़ी है तांहें।। ३१ ।।

अक्षर के सत स्वरूप में जहां पहली बहिश्त कजा वाली बनी है उसके तेज की बात बहुत बड़ी है।

नूर रास भी बरन्यो ना गयो, तो भिस्त बरनन क्यों होए।
बोहोत बड़ी तफावत, रास भिस्त इन दोए।। ३२ ।।

जब रास के वृन्दावन के नूर की ही शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता तो इस बहिश्त जो सत स्वरूप में होगी, उसका वर्णन कैसे करें? रास में और बहिश्त में बहुत ही बड़ा फर्क हैं, कैसे कहें?

सोभा भिस्त जिमीय की, और सोभा भिस्त दरखत।
पुरों पुरों नूरी बसें, ए क्यों होए खूबी सिफत।। ३३ ।।

बहिश्त की, भूमि की, वृक्षों की, पुरा-पुरा (कालोनी-कालोनी) जहां पर मोमिनों के जीवों के नूरी तन रहेंगे, उनकी खूबी की शोभा कैसे कहें?

Nijanand App

सोभा भिस्त मोहोल मंदिरों, और सोभा नूरियों अंग।
नूर असल अंग भेदिया, ए नाहीं नूर तरंग।। ३४ ।।

बहिश्त के महल, मन्दिर और उन नूरियों (ब्रह्म प्रियाओं) के तनों की शोभा अद्‌भुत है। यह नूरी तन हमारे असली अंगों के जीव हैं। यह अक्षर के नूर की तरंग नहीं है।

निबेरा भिस्त रास का, कहूं पावने रूहों हिसाब।
भिस्त को सुख है जागते, रास को सुख है ख्वाब।। ३५ ।।

रास और बहिश्त का ब्योरा रूहों को समझाने के वास्ते कहा है। रास का सुख सपने का है और बहिश्त का सुख जागृत अवस्था का है।

रास भिस्त या जो कछू, ए सब पैदा असल नूर।
तिन असल नूर की क्यों कहूं, जो द्वार आगूं हजूर।। ३६ ।।

रास और बहिश्त या जो कुछ भी है, अक्षर से उत्पन्न हुई है, तो उस अक्षर का वर्णन कैसे करूं जो नित्य ही श्री राजजी के दर्शन करने जाता है।

ए जो नूर मकान आगूं अर्स के, नूर बका असल।
ए रूहें असलू कानो सुनियो, असल तनों के दिल।। ३७ ।।

अखण्ड परमधाम में रंग महल के सामने ही अक्षर धाम है। हे मोमिन! तुम परमधाम की असल रूहें हो। वह अपने असल तनों के कानों से सुनो और दिल में विचार करो।

ए असल नूर मकान की, ए नूर सागर साबित।
देखे नूर के तरंग, रास भिस्त कही तित।। ३८ ।।

यह अक्षर ब्रह्म का जो नूर है वही नूर सागर है और उसी नूर सागर की एक तरंग में यह रास की बहिश्त अखण्ड है।

नूर लेहेरें दायम उठें, पाउ पल में बिना हिसाब।
कोई लेहेर कायम करे, कई उड़ावें कर ख्वाब।। ३९ ।।

अक्षर के चौथाई पल में नूर की लहरें सदा उठा करती हैं। जिनमें से किसी को अक्षर ब्रह्म कायम कर लेते हैं और बाकी को सपने की तरह उड़ा देते हैं।

नूर मकान जिमी असल, असल बन चौफेर।
पसु पंखी असल, खेलत घेरों घेर।। ४० ।।

अक्षर धाम की भूमि अखण्ड है। चारों तरफ वन अखण्ड है। पशु-पक्षी जो वहां खेलते हैं वह भी अखण्ड हैं।

नूर जिमी बन नूर जल, आकास वाए सब नूर।
नूर पसु पंखी द्वारने, नूर सब ससि सूर।। ४१ ।।

वहां की जमीन, जल, वन, आकाश, हवा, पशु, पक्षी, दरवाजे तथा चन्द्रमा और सूर्य सब नूर के हैं।

एक पात ना खिरे बन का, ना गिरे पंखी का पर।
नया पुराना न होवहीं, जंगल या जानवर।। ४२ ।।

वहां के वन का पत्ता नहीं गिरता और पक्षी का पंख नहीं गिरता। वहां जंगल हों, जानवर हों, कुछ भी नया या पुराना नहीं होता।

Nijanand App

दरबार मोहोल नूर सबे, सब नूरै नूर विस्तार।
ए नूर कहूं मैं कहां लग, कहूं याको वार न पार सुमार।। ४३ ।।

अक्षर ब्रह्म का दरबार नूर का है और सब नूर ही नूर का विस्तार है। उसका वर्णन कहां तक करूं? सब बेशुमार है।

ए सब नूर एक होए रह्या, रोसनी न काहूं पकराए।
बिना नूर कछू ना देखिए, रह्या बाहेर मांहें भराए।। ४४ ।।

यह सब नूर एक हो रहा है। जहां तक भी देखें नूर ही नूर है, इसलिए इसका वर्णन करना सम्भव नहीं है। अन्दर-बाहर सब नूर ही नूर झलक रहा है।

रास भिस्त लेहेरें कही, कही नूर मकान की बिध।
आगे तो नूर तजल्ला, सो ए देऊं नेक सुध।। ४५ ।।

रास और बहिश्त की लहरों की तथा अक्षर धाम की हकीकत तुमको बता दी है। अब आगे परमधाम है। इसकी भी तुमको थोड़ी-सी सुध देते हैं।

जहां पर जले जबराईल, इत थें आगे न सके चल।
दरगाह अर्स अजीम की, हक हादी रूहें असल।। ४६ ।।

जहां से आगे जबराईल फरिश्ता नहीं जा सका, वहां हक हादी और रूहों के रहने का घर परमधाम है।

अब नूर कहूं अंदर का, नूर मोहोल मंदिरों नहीं पार।
एही भूल है अपनी, सोभा ल्याइए मांहें सुमार।। ४७ ।।

अब परमधाम के अन्दर की शोभा बताती हूं। यहां के महल मन्दिरों की शोभा बेशुमार है। यह हमारी भूल है जो उस शोभा का यहां पर वर्णन करते हैं।

नूरजमाल अंग का नूर जो, बड़ी रूह रूहों सिरदार।
बड़ी रूह के अंग का नूर जो, रूहें बुजरक बारें हजार।। ४८ ।।

अक्षरातीत का नूर अंग श्री श्यामा महारानी हमारी सिरदार (प्रमुख) हैं तथा बड़ी रूह श्यामा महारानी के अंग के नूर से बारह हजार रूहें हैं।

सुख जो अर्स अजीम के, सो होए नहीं मजकूर।
ए अर्स तन से बोलत, मांहें खिलवत हक हजूर।। ४९ ।।

परमधाम के जो अखण्ड सुख हैं, उनका वर्णन यहां के तनों से और शोभा से नहीं हो सकता। श्री महामतिजी कहती हैं कि मेरे अन्दर श्री राजजी महाराज बैठे हैं और मैं अपने अर्श के तन से ही कुछ वर्णन कर रही हूं।

जो रूह होवे अर्स की, सो सुनियो अर्स तन कान।
अर्स अकलें विचारियो, मैं केहेती हों अर्स जुबान।। ५० ।।

जो रूहें अर्श परमधाम की हैं वह अपने अर्श तन के कानों से सुनना और अर्श की अक्ल से विचार करना। मैं भी अर्श की जबान से कहती हूं।

हम रूहें हमेसा बका मिने, रूह अल्ला के तन।
असल तन हमारे अर्स में, और कछू न जानें हक बिन।। ५१ ।।

हम ब्रह्मसृष्टियां अखण्ड घर में श्यामा महारानी के अंग हैं। असल तन अर्श में होने से हम सिवाय पारब्रह्म के किसी को नहीं जानते।

Nijanand App

हम सबमें इस्क हक का, ऊपर बरसे हक का नूर।
हम हमेसा हक खिलवतें, हम सब हक हजूर।।५२ ।।

हम सबके अन्दर हक का इश्क है और ऊपर से हक की नूरी बरसात (श्यामाजी के प्यार की) होती है। हम हमेशा हक के सामने परमधाम में रहती हैं। वह खिलवत है।

पेहेले कह्या नूर मकान जो, सो नूर मांहें वाहेदत्त।
हक हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत्त सब निसबत।।५३ ।।

पहले हमने जो अक्षरधाम का वर्णन किया है वह राजजी महाराज के स्वरूप का ही नूर है। परमधाम में हक हादी (श्यामाजी) और रूहें रहती हैं। वह सब एक दिल हैं, वाहेदत हैं।

बाग जिमी जो अर्स की, और पसु जानवर।
कहा कहूं सुख साहेबी, जिन पर हक नजर।।५४ ।।

परमधाम की जमीन, बगीचा, पशु और जानवरों के सुख की साहेबी का वर्णन कैसे करूं, जिन पर हक परवरदिगार की मेहर सदा बरसती है।

और जरा न हक बका बिना, खेल सदा होत नूर से।
एक पल में कई पैदा करे, इंड उड़ावे पल में।।५५ ।।

परमधाम में हक श्री राजजी महाराज के बिना कुछ और नहीं है। खेल सदा अक्षर के हुकम से बनते हैं। यह एक पल में ऐसे कई इण्ड (ब्रह्माण्ड) बनाते और मिटाते हैं।

हम रूहें खेल जानें नहीं, जो नूर से उपजत।
ओ खेले अरवा गफलत में, ऊपर भी गफलत।।५६ ।।

अक्षर जो खेल बनाते हैं हम रूहें नहीं जानती थीं। अक्षर द्वारा रचित खेल में निराकार के झूठे जीव रहते हैं और उनके ऊपर झूठा आवरण भी निराकार का है।

हम जानें इस्क बड़ा हमपे, बड़ी रूह और हक से।
बड़ी रूह जाने सब से, बड़ा इस्क है हम में।।५७ ।।

हम जानती थीं कि हमारा इश्क श्यामाजी और श्री राजजी से बड़ा है। श्यामाजी जानती थीं कि उनका इश्क बड़ा है।

हकें कह्या हादी रूहन से, तुम नहीं मेरे माफक।
तुम तेहेकीक मेरे मासूक, मैं तुमारा आसिक।।५८ ।।

हक श्री राजजी ने हादी श्री श्यामाजी से कहा कि तुम सब मिलकर मेरे बराबर नहीं हो सकते। तुम निश्चित ही मेरे माशूक हो और मैं तुम्हारा आशिक हूं।

होत हांसी हमेसा, सब बड़ा जाने अपना प्यार।
ए बेवरा वाहेदत में होए नहीं, जित नाहीं जुदागी लगार।।५९ ।।

परमधाम में सदा अपना प्यार ज्यादा बताकर हांसी (हंसी) करते थे, लेकिन परमधाम में जरा भी जुदाई नहीं है और इसलिए वहां इश्क का ब्योरा नहीं हो सकता।

तब हकें कह्या फरामोस का, खेल देखावें हम।
मैं जुदे भी तुमें न करूं, देखाऊं तले कदम।।६० ।।

तब श्री राजजी ने कहा कि हम तुमको फरामोशी का खेल दिखाते हैं। हम तुमको अलग भी नहीं करेंगे और चरणों के तले बिठाएंगे।

Nijanand App

हकें हुकम किया दिल पर, तब खेल मांग्या हम एह।
तब हमको खेल देखाइया, खेल हुआ नूर का जेह।। ६१ ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसा हुकम हमारे दिल पर कर दिया जिससे हमने खेल मांग लिया और हमको अक्षर का खेल दिखाया।

तो खेल हम देखिया, न तो कैसा खेल कौन हम।
क्यों उतरें रूहें अर्स से, छोड़ के एह कदम।। ६२ ।।

इसलिए हमने खेल को देखा, नहीं तो खेल कैसा और हम कौन। श्री राजजी के चरण छोड़ खेल में क्यों उतरे?

खेल हुआ हम वास्ते, हम पर हादी ल्याए फुरमान।
हम वास्ते कुंजी रूहअल्ला, दई इमाम हाथ पेहेचान।। ६३ ।।

हमारे लिए खेल हुआ और हमारे लिए रसूल साहब कुरान लाए। हमारे वास्ते रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) ने कुंजी (तारतम) लाकर पहचान कराने के वास्ते इमाम मेंहदी के हाथ में दी।

ए तीनों सूरत हादीय की, आई जुदी जुदी हम कारन।
आखिर खेल देखाए के, सब समझाई रूहन।। ६४ ।।

यह तीनों सूरतें (बसरी, मलकी, हकी) हमारे हादी श्री राजजी की हमारे वास्ते आईं और आखिरत का खेल दिखलाकर के रूहों को पहचान कराई।

अर्स हक की लज्जत, दई खेल में हम को।
हक साहेबी हक इस्क, हमारे लाड़ पाले कुंजीसों।। ६५ ।।

घर की तथा श्री राजजी महाराज के सुख की लज्जत हमको खेल में दी। तारतम की कुंजी से श्री राजजी महाराज की साहेबी या इश्क का और हमारे लाड़ पूरा करने का सब पता लगा।

हम बैठे देख्या वतन में, हकें ऐसी करी हिकमत।
आए न गए हादी हम, ऐसा देख्या मांहें खिलवत।। ६६ ।।

हम घर में बैठे ही खेल देख रहे हैं। ऐसी हिकमत से श्री राजजी ने खेल दिखाया। हम और हादी न कहीं आए हैं और न कहीं गए हैं। मूल मिलावे में ही बैठकर खेल देख रहे हैं।

हक न्यामत मैं देत हों, जो होसी अर्स अरवाए।
ए सुनते निसानियां अर्स की, लगसी कलेजे घाए।। ६७ ।।

श्री महामति जी कहती हैं, हे रूहो! मैं तुम्हें हक की न्यामत (जागृत बुद्धि) दे रही हूं, इसलिए जो अर्श की अरवाहें होंगी उनको, इस घर की बातों को सुनकर कलेजे में चोट लगेगी।

पेहेचान हक अर्स रूहन की, ए केहेते आवसी इस्क।
ए सुन रूहें न सेहे सकें, बिछोहा अर्स हक।। ६८ ।।

हक की रूहों की ही पहचान है कि उनको यह वचन सुनते ही इश्क आएगा और वह धनी का विछोह नहीं सहन कर पाएंगी।

हम उतरें चढ़ें तो खेल में, जो जरा दूसरा होए।
ए देखो हक इलम से, अर्स अरवा न उरझे कोए।। ६९ ।।

हम परमधाम से खेल में आने-जाने की बात तब करें जब खेल का जरा भी रूप हो। आप हक के इलम से विचार कर देखोगे तो उसके मोमिन कहीं नहीं उलझेंगे।

Nijanand App

हकें दिया इलम अपना, तिनका तो हकै से काम।
और हम को क्या हक बिना, रात दिन लेना क्यों आराम।।७० ।।

हक ने जिनको अपना इलम दिया है उनको हक से ही काम है। हमको हक के बिना रात-दिन कैसे आराम हो सकता है?

हम खेल देख्या लग मुद्दत, जेते रूहअल्ला के तन।
खेल देख पीछे फिरें, जानें बेर न लगी अधखिन।।७१ ।।

हम श्यामा महारानी के जितने तन (रूहें) हैं, उन्होंने समझा है कि जैसे हम मुद्दतों से खेल देख रहे हैं, परन्तु खेल देखकर जब वापस जाएंगे और देखेंगे तो आधे क्षण का समय भी नहीं हुआ होगा।

ए देख्या बैठे वतन में, हक सुख लिए हम इत।
सो इन देह इन जिमिऐं, लिए सुख हक निसबत।।७२ ।।

हमने घर बैठकर यह खेल देखा और खेल में हक के सुखों को हमने यहां इस तन और यहां की जमीन पर लिया और अपनी निसबत को पहचाना।

फेर फेर हक वाहेदत्त, फेर फेर हक खिलवत।
फेर फेर सुख निसबत के, फेर फेर ए लई न्यामत।।७३ ।।

हमने बार-बार हक की खिलवत और वाहेदत तथा निसबत होने के सुखों की न्यामत प्राप्त की।

महामत कहें मोमिन की, मिट गई दुनियां चाल।
देखिए हक दिल अर्स में, तो अबहीं बदले हाल।।७४ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मोमिनों की दुनियां वाली रहनी मिट गई। यदि हम अपने अर्श दिल में हक को देखें तो हमारी भी रहनी अभी बदल जाएगी।

।। प्रकरण ।। ३९ ।। चौपाई ।। १५४० ।।

सनन्ध–खंडनी जाहेरियों की

लिख्या है कतेब में, पाया न किन ठौर।
ना फरिस्तों ना नबियों, तो क्यों पावे कोई और।। १ ।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान ग्रन्थों में तो पारब्रह्म की पहचान लिखी है, पर किसी को उसकी पहचान या ठिकाने का पता नहीं चला। जब फरिश्तों और पैगम्बरों को ही नहीं पता चला तो और कोई कैसे पा लेता?

लिख्या जो रसूल ने, तिन तो कह्या अगम।
तबक चौदे ख्वाब के, न्यारा रह्या खसम।। २ ।।

रसूल साहब ने भी कुरान में लिखा है कि पारब्रह्म अगम है (पहुंचा नहीं जा सकता)। चौदह लोक का ब्रह्माण्ड सपने का है, इसलिए पारब्रह्म इससे न्यारा है।

खुद तो किन को ना मिल्या, अब काजी कजा चलाए।
कहें जो चाहे खुद को, हम मिलावें ताए।। ३ ।।

खुदा किसी को नहीं मिला। अब श्री प्राणनाथजी काजी (न्यायाधीश) बनकर न्याय करने आए हैं और कहते हैं कि जिसे पारब्रह्म चाहिए वह हमारे पास आओ, हम मिलाते हैं।

Nijanand App